# नैतिकता से राष्ट्र की सेवा

**प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,**

**पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान**

नैतिकता और राष्ट्र सेवा दोनों ही महत्वपूर्ण है। नैतिकता से तात्पर्य ऐसे मूल्यों से है जिन्हें समाज की सम्पत्ति कहा जाता है। समाज में परम्परागत कुछ ऐसे मूल्य रहते हैं जिनके अनुरूप कार्य करना नैतिक कहा जाता है और उनके विरूद्ध कार्य करना अनैतिक कहा जाता है। नैतिकता मानवता को उत्पन्न करती है। धर्म का आचरण करना नैतिकता कहलता है। मंदिर या मस्जिद में जाकर के कोई चन्दन या टीका लगाये या न लगाये किन्तु यदि वह नैतिक आचरण करता है तो समाज उसे मान्यता देता है। राष्ट्र सेवा के लिए हम क्या करते हैं? राष्ट्र सेवा क्या है इन सब बातों को ध्यान में रखकर हमें राष्ट्र सेवा करनी चाहिए। जो व्यक्ति समाज में समरसता स्थापित करता है, भाईचारे का संदेश देता है और राष्ट्रहित का चिंतन करता है। वह राष्ट्रसेवक कहलाता है। राष्ट्र सेवा देश के सैनिक भी करते हैं उन्हीं के कारण देश सुरक्षित रहता है। उनका बलिदान, उनका त्याग और उनका देशसेवा व्रत राष्ट्र के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। जो व्यक्ति जहां भी नियुक्त है, समर्पण भाव से यदि वह अपने कार्य को करता है तो उसका कार्य नैतिक भी है और वह राष्ट्र सेवा का कार्य करता है। शिक्षक, चिकित्सक, सैनिक, अधिकारी, किसान, मजदूर जो किसी न किसी कार्य में लगे हुए हैं वे देश सेवा ही कर रहे हैं। नैतिकता बहुत ही अच्छा गुण है। स्वार्थ की चेतना को छोड़कर परार्थ और परमार्थ की चेतना को जागृत करना राष्ट्र सेवा है।

नैतिकता वह मूल्य है जो समाज के द्वारा स्थापित किया जाता है। नैतिक व्यक्ति धार्मिक और उदार होता है। समाज, राज्य, देश और पूरे विश्व पर नैतिकता लागू होती है। आज के युग में शोषण की प्रवृत्ति बढ़ रही है। अनैतिकता और शोषण का परिणाम हमें ही मिलता है। नैतिक व्यक्ति ईमानदार होता है, उसके जीवन में सर्वत्र, सदाचार और मूल्यों का महत्व रहता है। नैतिकता से कमाया गया धन स्थायी रहता है। जो दूकानदार जीवन में नैतिकता और प्रामाणिकता को महत्व देता है उसकी तरफ ग्राहक भी आकर्षित होते है। ग्राहकों को यह

विश्वास होता है कि इस दूकान से लिया गया समान प्रामाणिक है। अनैतिकता से कमाया गया धन नष्ट होने के साथ ही साथ परिवार को भी नष्ट कर देता है। जीवन में तीन चीजें बहुत महत्वपूर्ण है– वृत्ति, प्रवृत्ति और प्रकृति। वृत्ति का अर्थ है हम प्रतिदिन जैसा आचरण करते हैं वह वृत्ति है। जब हम बार–बार वही करते है तो वह हमारी प्रवृत्ति बन जाती है। धीरे–धीरे प्रवृत्ति ही हमारी प्रकृति बन जाती है। कहने का भाव यह है कि विचार के अनुकूल व्यवहार बनता है और व्यवहार से व्यक्तित्व एवं चरित्र बनता है। भारतीय संस्कृति नैतिकता के मूल्यों से संवलित है। हमारी संस्कृति नैतिक आचार विचार व व्यवहार का पालन करने के लिए सदैव प्रेरित करती रहती है। यहां का प्रत्येक कार्य संस्कार जन्य है। जन्म से लेकर के मृत्यु पर्यन्त संस्कारों एवं नैतिक मूल्यों की एक श्रृंखला है, जिससे बद्ध होकर के जीवन अध्यात्म एवं नैतिक युक्त हो जाता है। यहां पर सभी जीवों में आत्म–दर्शन का बोध बताया गया है। अणु से लेकर विराट् तक सर्वत्र आत्मा का दर्शन करना चाहिए यह भारतीय संस्कृति का संदेश है। आत्मा सच्चिदानन्द स्वरूप है। आत्म स्वातन्त्र्य मानव जीवन की सर्वोत्कृष्ट संपदा है। व्यक्ति अपने आप में एक विचार जगत लेकर चलता है, उसकी प्रवृत्तियाँ निरन्तर विचारों से प्रभावित होती है। परापेक्षा और पर निर्भरता कुछ ऐसी मानसिक कमजोरियाँ हैं, जो प्रायः आम व्यक्ति में पाई जाती हैं। सादगी और नैतिकता का भी अपना एक दर्शन है, इसे हम आत्मशांति का दर्शन कह सकते हैं। व्यक्ति अपने आप में कैसा भी है वह उसकी वास्तविकता है। नैतिकता के लोक व्यापी प्रतिमान होते हैं और उन प्रतिमानों की सुरक्षा करना प्रत्येक सामाजिक व्यक्ति के लिए अनिवार्य हो जाता है। नैतिकता के प्रतिमानों की सुरक्षा को हम प्रदर्शन नहीं कह सकते। प्रदर्शन रूप प्रतिमान वे होते हैं जिनमें सभ्यता के भाव मुख्य नहीं होकर प्रदर्शन के भाव तीव्र होते हैं। नैतिकता को स्वीकार करते हुए सहज शुद्ध जीवन जीना ही वास्तविक विचार–दर्शन है, जो व्यक्ति को आत्म शांति प्रदान करता हुआ प्रगति के पथ पर अग्रसर करता है। नैतिक मूल्यों में करूणा, त्याग, अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह आदि मूल्यों का समावेश है। जिनका पालन करने से जीवन में शांति प्राप्त होती है।

करूणा मानवीय संवेदना का एक ऐसा भाव है जिसमें मानव का हृदय विगलित होता चला जाता है। करुणा भाव भी मानव को अभिभूत कर देता है। उसकी उत्प्रेरणा भी बहुत प्रबल

होती है। करुणा भाव किसी राग भाव का अंग नहीं होकर एक स्वतंत्र आत्म भाव है। राग भाव किसी परिचित या चिरपरिचित के साथ ही हो पाता है किन्तु करुणा भाव के लिए कोई शर्त नहीं है। करुणा भाव कहीं भी, यहां तक कि नितांत अपरिचित प्राणी को भी पीड़ा–ग्रस्त देखकर उभर सकता है। नैतिक आचरण से आत्म सुख प्राप्त होता है। नैतिक व्यक्ति निडर होता है। उसको किसी से भय नहीं लगता। उसके जीवन में प्रामाणिकता रहती है। जो अनैतिक आचरण करता है धीरे–धीरे उसका पतन होता जाता है। समाज में जितने भी अच्छे मूल्य हैं वे सभी नैतिकता के अन्तर्गत परिगणित होते हैं।